Damodar Hari Chapekar

Krantiveer Damodar Hari Chapekar was born on 25 June, 1869 as the eldest son of renowned Kirtankar Haripant Chapekar in Chinchwad Village of Maharashtra.

During 1896-1897, Pune was hit by Bubonic Plague. Under the chairmanship of W. C. Rand, an Indian Civil Service officer, a Special Plague Committee was formed. Troops were brought in to deal with the emergency. The measures employed included forced entry into private houses, evacuation to hospitals and segregation camps, removing and destroying personal possessions, and preventing movement from the city. These measures were considered oppressive by the populace of Pune and complaints were ignored by Rand. W. C. Rand and his Military escort, Lt. Ayerst, used to harass the people of the city. This led to widespread resentment against the two officers prompting Lokmanya Tilak to express his frustration.

On 22 June, 1897, the Diamond Jubilee of coronation of Queen Victoria was being observed at the Government house where these two British officers W.C. Rand and his military escort, Lt. Ayerst were also present. The three Chapekar brothers reached there and waited for these two British officers to come out of Government house. Around midnight, these officers boarded their respective wagons. Damodar Hari Chapekar shot W.C. Rand by claiming his wagon. Rand breathed his last on 3 July, 1897.

After this incident, Chapekar brothers became heroes in the eyes of the people of Pune. The Chapekar Brothers were charged with murder in various roles, shooting of two informants and an attempt to shoot a police officer. Lord Sandstone and the then Governor of Mumbai announced prize money of Rs. Ten Thousand and Rs. Twenty Thousand respectively for providing information about and arrest of Chapekar brothers. On 30th September, British police officer Brewin arrested Damodar Hari Chapekar after receiving tips from an informant.

Session's Judge awarded Damodar Hari Chapekar death sentence which he heard with a brave smile on his face. Lokmanya Tilak gifted him a copy of "Geeta" which he carried with him till the last day of his life ie. 18 April, 1898, when he was hanged.

Krantiveer Damodar Hari Chapekar of Chinchwad village sacrificed his life for the freedom of the country and for the dignity of his countrymen.

Department of Posts is pleased to issue a Commemorative Postage Stamp on Damodar Hari Chapekar on 120 years of his death.

Credits:

Text	:	**Based on information received from the proponent**
Stamp/ FDC/ Brochure	:	**Smt. Vinita Sinha**
Cancellation Cachet	:	**Smt. Alka Sharma**

भारतीय डाक विभाग
Department of Posts
India

दामोदर हरी चापेकर
DAMODAR HARI CHAPEKAR

विवरणिका BROCHURE

दामोदर हरी चापेकर

क्रांतिवीर दामोदर हरी चापेकर का जन्म 25 जून, 1869 को महाराष्ट्र के चिंचवाड़ गांव में प्रसिद्ध कीर्तनकार हरिपंत चापेकर के ज्येष्ठ पुत्र के रूप में हुआ था।

सन 1896-1897 के दौरान, पुणे ब्युबोनिक प्लेग की बीमारी से ग्रसित था। भारतीय सिविल सेवा के अधिकारी, डब्ल्यू. सी. रैंड की अध्यक्षता में एक विशेष प्लेग समिति का गठन किया गया। इस आपातकालीन स्थिति से निपटने के लिए सैनिकों को लगाया गया था। इस बीमारी की रोकथाम के लिए उठाए गए कदमों में लोगों के घरों में जबरन प्रवेश करना, अस्पतालों और पृथक्करण कैंपों में लोगों को भर्ती करना तथा निजी वस्तुओं को नष्ट करना और लोगों के शहर से बाहर जाने पर पाबंदी लगाना शामिल था। उठाए गए इन कदमों को पुणे की जनता ने दमनकारी माना और लोगों ने इसकी शिकायत की, लेकिन रैंड ने उनकी शिकायतों को नजरअंदाज कर दिया। डब्ल्यू. सी. रैंड और उनके मिलिट्री एस्कॉर्ट ले. आयर्स्ट शहर के लोगों को उत्पीड़ित करते रहते थे। इसके चलते इन दोनों अधिकारियों के विरुद्ध लोगों में व्यापक असंतोष फैल गया और लोकमान्य तिलक ने भी इस मुद्दे पर अपनी नाराजगी जाहिर की।

22 जून, 1897 को, गवर्नमेंट हाउस में महारानी विक्टोरिया के राज्याभिषेक की हीरक जयन्ती मनाई जा रही थी, जहां पर ये दोनों ब्रिटिश अधिकारी, डब्ल्यू. सी. रैंड और उनके मिलिट्री एस्कॉर्ट ले. आयर्स्ट भी मौजूद थे। तीनों चापेकर बन्धु वहां पहुंच गए और इन दोनों ब्रिटिश अधिकारियों के गवर्नमेंट हाउस से बाहर निकलने की प्रतीक्षा करने लगे। लगभग मध्य रात्रि के समय ये अधिकारी अपनी-अपनी बग्घियों पर सवार हुए। दामोदर हरी चापेकर ने बग्घी पर चढ़कर डब्ल्यू. सी. रैंड को गोली मार दी। रैंड की 3 जुलाई, 1897 को मृत्यु हो गई।

इस घटना के बाद चापेकर बन्धु पुणे की जनता की नजरों में हीरो बन गए। चापेकर बन्धुओं पर हत्या करने तथा दो मुखबिरों को गोली मारने के साथ-साथ एक पुलिस अधिकारी की हत्या करने के प्रयास जैसे कई मामलों में लिप्त होने संबंधी आरोप लगाए गए। लॉर्ड सैंडस्टोन तथा मुम्बई के तत्कालीन गवर्नर ने चापेकर बन्धुओं के बारे में सूचना देने तथा उन्हें गिरफ्तार करने वाले को क्रमशः दस हजार रुपए तथा बीस हजार रुपए की राशि इनाम स्वरूप देने की घोषणा की। ब्रिटिश पुलिस अधिकारी ब्रेविन ने एक मुखबिर द्वारा दी गई सूचना के आधार पर 30 सितम्बर को दामोदर हरी चापेकर को गिरफ्तार कर लिया।

सत्र न्यायाधीश ने दामोदर हरी चापेकर को मृत्यु दण्ड की सजा सुनाई, जिसे उन्होंने मन्द-मन्द मुस्कान के साथ सुना। लोकमान्य तिलक ने उन्हें ''गीता'' की एक प्रति भेंट की जिसे उन्होंने अपने जीवन के अंतिम दिन अर्थात, 18 अप्रैल, 1898 को फांसी लगाए जाने तक अपने पास रखा।

चिंचवाड़ गांव के क्रांतिवीर दामोदर हरी चापेकर ने देश की स्वतंत्रता तथा अपने देशवासियों के स्वाभिमान के लिए अपने प्राणों की आहुति दी।

डाक विभाग दामोदर हरी चापेकर के बलिदान के 120 वर्ष पूरे होने के अवसर पर स्मारक डाक टिकट जारी करते हुए गर्व का अनुभव करता है।

आभार :

मूलपाठ : प्रस्तावक द्वारा उपलब्ध कराई गई सूचना पर आधारित

डाकटिकट/ प्रथम दिवस आवरण/ विवरणिका : श्रीमती विनीता सिन्हा

विरूपण : श्रीमती अलका शर्मा

भारतीय डाक विभाग
DEPARTMENT OF POSTS
INDIA

तकनीकी आंकड़े
TECHNICAL DATA

मूल्यवर्ग	:	500 पैसा
Denomination	:	500 p
मुद्रित डाक-टिकटें	:	530390
Stamps Printed	:	530390
मुद्रण प्रक्रिया	:	वेट ऑफसेट
Printing Process	:	Wet Offset
मुद्रक	:	प्रतिभूति मुद्रणालय, हैदराबाद
Printer	:	Security Printing Press, Hyderabad

The philatelic items are available for sale at
http://www.epostoffice.gov.in/PHILATELY_3D.html

मूल्य: ₹ 5.00